This question paper contains **4+2** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **5002**

Unique Paper Code : **205181** **G**

Name of the Paper : **CP 1.4-Hindi Language (A)**

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : **I**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

1. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

संतो देखत जग बौराना।

साँच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना॥

नेमी देखा धरमी देखा, प्रात करै असनाना।

आतम मारि पखानहि पूजै, उनमें कछु नहिं ज्ञाना॥

बहुतक देखा पीर औलिया, पढ़े कितेब कुराना।

कै मुरीद तदबीर बतावैं, उनमें उहै जो ज्ञाना॥

आसन मारि डिंभ धरि बैठे, मन में बहुत गुमाना।

पीतर पाथर पूजन लागे, तीरथ गर्व भुलाना॥

P.T.O.

1. प्रस्तुत पद्यांश के कवि का नाम बताइए।

2. साँच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना—इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

3. प्रस्तुत पद्यांश में किन लोगों की आलोचना की गई है ?

अथवा

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँक नहीं।

तहाँ साँचे चलैं तजि आपनुपौ झझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।

घनआनन्द प्यारे सुजान सुनौ इत एक ते दूसरो आँक नहीं।

तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं॥

1. स्नेह का मार्ग कैसा होता है ?

2. सुजान कौन थी ?

3. घनानंद को सुजान से क्या शिकायत थी ?

2. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 6

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ मधुर चाँदनी रातों की

अरे खिलखिलाकर हँसते होने वाली उन बातों की।

मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जागं गया ?

आलिंगन में आते-आते मुस्क्या कर जो भाग गया

जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुन्दर छाया में

अनुरागिनी उषा लेती निज सुहाग मधुमाया में।

अथवा

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने

मैके में आयी बेटी की तरह मगन है,

फूल सरसों की छाती से लिपट गयी है,

जैसे दो हमजोली सखियाँ गले मिली हैं,

भैया की बाँहों छूटी भौजाई-सी

लहँगे सी लहराती लचती हवा चली है।

3. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

सिद्धेश्वरी की पहले हिम्मत नहीं हुई कि उसके पास आए और वहीं से वह भयभीत हिरनी की भाँति सिर उचका-घुमाकर बेटे को व्यग्रता से निहारती रही। किन्तु लगभग दस मिनट बीतने के पश्चात भी जब रामचंद्र नहीं उठा, तो वह घबरा गई। पास जाकर पुकारा-बड़कू, बड़कू! लेकिन उसके कुछ उत्तर न देने पर डर गई लड़के की नाक के पास हाथ रख दिया। साँस ठीक से चल रही थी। फिर सिर पर हाथ रखकर देखा, बुखार नहीं था हाथ के स्पर्श से रामचंद्र ने आँखें खोलीं। पहले उसने माँ की ओर सुस्त नजरों से देखा, फिर झट से उठ बैठा।

1. प्रस्तुत गद्यांश किस पाठ से लिया गया है और इसके लेखक कौन हैं ?

2. सिद्धेश्वरी कौन थी ?

3. सिद्धेश्वरी का स्वभाव कैसा था ?

अथवा

बाबा भारती चले गए, परन्तु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी तरह गूंज रहे थे। सोचने लगा, कैसे उच्च विचार हैं। कैसा पवित्र भाव है। उन्हें, इस घोड़े से प्रेम था। इसे देखकर उनका मुँह फूल की तरह खिल जाता था। कहते थे, इसके बगैर मैं रह न सकूँगा। इसकी रखवाली में वह कई रातें सोए नहीं। भजन-भक्ति के बदले रखवाली करते रहे। मगर आज उनके मुँह पर चिंता की रेखा तक न दिखाई देती थी। उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्योछावर कर दिया ऐसा मनुष्य नहीं देवता है।

1. यह गद्यांश किस पाठ से लिया गया है और इसके लेखक कौन हैं ?

2. खड़गसिंह कौन था ? वह किसके बारे में सोच रहा था ?

3. बाबा भारती के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।

6

4. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

न मैं किसी गिरजे में जाता हूँ और न ही किसी मन्दिर में; न मैं नमाज़ी हूँ और न रोज़ा ही रखता हूँ; न संध्या ही करता हूँ और न कोई देवपूजा ही करता हूँ; न किसी आचार्य के नाम का मुझे पता है और न ही कभी किसी के आगे मैंने सिर ही झुकाया है। तो इससे प्रयोजन ही क्या और इससे हानि भी क्या ? मैं तो अपनी खेती करता हूँ; अपने हल और बैलों को प्रात:काल उठकर प्रणाम करता हूँ; मेरा जीवन जंगल के पेड़ों और पक्षियों की संगति में गुजरता है; आकाश के बादलों को देखते-देखते मेरा दिन निकल जाता है।

अथवा

प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्त्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण—प्रभाव, शील, अचल-स्थिति संयुक्त आचरण—न तो साहित्य के लंबे व्याख्यानों से, न वेद की श्रुतियों के मीठे-मधुर उपदेश से, न अंजील से, न कुरान से, न धर्म-चर्चा से, न केवल सत्संग से। जीवन के अरण्य में घुसे हुए पुरुष के हृदय पर, प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन-व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मंद-मंद चोटों की तरह आचरण का रूप शनैः-शनैः प्रत्यक्ष होता है।

5. "अरी वरुणा की शांत कछार" शीर्षक कविता का प्रतिपाद्य लिखिए। 8

अथवा

"मार हथौड़ा कर कर चोट" शीर्षक कविता के मूल भाव पर प्रकाश डालिए।

6. "बड़े घर की बेटी" कहानी के माध्यम से प्रेमचंद समाज को क्या संदेश देना चाहते हैं ? 7

अथवा

"गेहूँ और गुलाब" पाठ के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कीजिए।

7. (क) विश्वकोश किसे कहते हैं ? सोदाहरण लिखिए। 5

अथवा

हिंदी के किसी एक शब्दकोश की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

(ख) विज्ञापन के गुणों पर प्रकाश डालिए। 5

अथवा

टिप्पण-लेखन में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

(ग) किन्हीं **दस** शब्दों के हिंदी प्रतिशब्द लिखिए : 5

Agent, Allotment, Amount, Commercialization, Contract, Damages, Disbursement, Dividend, Enclosure, Import, Indemnity Bond, Insured, Open Account, Payment, Sales Branch.

8. (क) सरकारी नौकरी के लिए आवेदन का प्रारूप तैयार कीजिए। 5

(ख) प्रारूपण की आवश्यकता और महत्त्व पर प्रकाश डालिए। 5

(ग) "पत्रकारिता का बदलता स्वरूप" अथवा "अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला" विषय पर संक्षिप्त लेख लिखिए। 5